अन्ना पशु एवं उनके चारे का प्रबंध

कृषि कुंभ (सितंबर, 2023),
खण्ड 03 भाग 04, पृष्ठ संख्या 79–80

अन्ना पशु एवं उनके चारे का प्रबंध

ज्ञानेन्द्र सिंह[1] एवं अमित कुमार[2]
[1]कृषि प्रसार एवं संचार विभाग, [2]शस्य विज्ञान विभाग
[1]सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, उत्तर प्रदेश, 250110
[2]बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा, उत्तर प्रदेश 210001, भारत।
Email Id: sgyanendra651@gmail.com

परिचय :

बुंदेलखंड भारत के कृषि प्रधान क्षेत्रों में से एक हैद्य विगत कुछ वर्षों से इस क्षेत्र को मौसम की प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा हैद्य मौसम की वजह से खराब फसल व कर्ज ना अदा कर पाने की व्यथा से व्यथित होकर हमारे कृषक आत्महत्या कर रहे हैंद्य इसी के साथ ही पिछले कुछ वर्षों से एक और महत्वपूर्ण समस्या किसानों के लिए चिंता परेशानी का विषय बनी हुई है, वह अन्ना प्रथा जब तक किसान को गोवंश से दूध की प्राप्ति होती है तब तक वह उसे पाल कर रखता है जैसे ही पशु दूध देना बंद करता है उसे खुला छोड़ दिया जाता है यही प्रथा अन्ना प्रथा कहलाती है, तथा ऐसे पशुओं को स्थानीय भाषा में अन्ना पशु कहते हैंद्य इनके द्वारा प्रतिवर्ष लगभग 30 से 35: फसल को क्षति पहुंचाई जाती है।

अन्ना प्रथा का प्रभाव :

अगर हम अन्ना प्रथा के प्रभाव का विश्लेषण करें तो यह किसानों के लिए किसी अभिशाप से कम नहीं है। किसान खेत में पसीना बहाकर अपनी मेहनत से जो फसल तैयार करते हैं, उस लहलहाती फसल को यह अन्ना पशु किसी भी समय नष्ट कर किसान को भारी नुकसान पहुंचाते हैंद्य इसके अतिरिक्त इन अन्ना पशुओं का झुंड जब सड़क, राजमार्गों इत्यादि से गुजरता है तो यह आए दिन सड़क हादसों की वजह बनता हैद्य अन्ना पशुओं से फसल की रक्षा के लिए किसानों को सर्दी, गर्मी, बरसात सभी मौसमों में दिन–रात खेतों में पहरा देना पड़ता है जिसमें बहुत से किसान बीमार होकर तथा जंगली जानवरों का शिकार होकर अपनी जान भी गंवा देते हैं।

समाधान :

अन्ना प्रथा से निजात पाने के लिए कुछ समाधान निम्नवत हैं–

1. **सेक्स सीमन तकनीक :–**
   इस तकनीक में वैज्ञानिकों द्वारा नर और मादा पशु पैदा करने की तकनीक को अलग कर दिया गया

है। गाय में सांड का वीर्य निषेचित करने से पूर्व सांड के वीर्य से गुणसूत्र को पूर्ण रूप से निष्कासित कर दिया जाता है। इससे कृत्रिम गर्भाधान द्वारा इस सीमन के प्रयोग से 90% तक मादा बछिया पैदा होती है। इस तकनीक का प्रयोग कर दुधारू नस्ल की बछिया पैदा की जा सकती है, जो अन्ना प्रथा को रोकने में सहायक होंगी।

2. **पांजरा पोल मॉडल का प्रयोग :–** इसका प्रयोग मुख्यता गुजरात, राजस्थान तथा महाराष्ट्र के किसानों द्वारा किया जा रहा है। मॉडल पांजरा पोल बीमार व बेसहारा पशुओं की देखभाल करने वाले सेंटर को कहते हैं। इसमें बीमार और आवारा घूम रहे पशुओं को आश्रय देखकर उनके खान–पान का ध्यान रखा जाता है। बुंदेलखंड के किसान भी इस मॉडल का प्रयोग कर अन्ना प्रथा से निजात पा सकते हैं।

4. **चरागाह एवं गौशाला की व्यवस्था :–** अन्ना पशु प्रबंधन के लिए सरकार द्वारा प्रत्येक ग्राम पंचायत में गौशाला की स्थापना के साथ ही उसकी नियमित देखरेख व पशुओं के लिए चरागाह की भी उपलब्धता कराई जानी चाहिए।

5. **गोवंश की महत्ता के प्रति जागरूकता :–** लोगों को गोवंश के प्रति जागरूक होना चाहिए कि जिन पशुओं को वह खुला छोड़े हुए हैं वही उनकी आय का स्रोत भी बन सकते हैं। गोवंश से दूध के अतिरिक्त उनसे प्राप्त होने वाले गोमूत्र और गोबर का प्रयोग कर विभिन्न प्रकार की जैविक उत्पाद जैसे जीवामृत, घन जीवामृत, कंपोस्ट इत्यादि तैयार कर मदर सुधार के साथी अच्छा मुनाफा भी प्राप्त किया जा सकता है।

6. **चारे की उपलब्धता :–** किसानों के पास यदि चारे की उपलब्धता होगी तो वह भोजन के अभाव में पशुओं को खुला नहीं छोड़ेंगे। ऐसी स्थिति में किसानों को नेपियर घास, सूडान घास, मक्खन घास तथा अजोला घास इत्यादि को तैयार करना चाहिए इससे अन्ना पशुओं के लिए भोजन की समस्या का समाधान आसानी से हो जाएगा।

भविष्य :

बुंदेलखंड में अन्ना पशुओं की समस्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, ऐसे में इस विकट समस्या से निजात पाने के लिए किसानों को भविष्य में जागरूक होने के साथ ही कृत्रिम गर्भाधान, नस्ल सुधार, पांजरा पोल मॉडल जैसी विधियों का प्रयोग करना बहुत ही आवश्यक है। इसके अतिरिक्त किसान को शीघ्र तैयार होने वाली चारे की फसलों का चयन कर उन्हें तैयार करना चाहिए। उक्त विधियों को अपनाकर भविष्य में बुंदेलखंड में अन्ना प्रथा का समापन संभव हो सकता है।